दसवाँ अध्याय

श्रीपराशर उवाच

साशीतिमण्डलशतं काष्ठयोरन्तरं द्वयोः । आरोहणावरोहाभ्यां भानोरब्देन या गतिः ॥१॥
स रथोऽधिष्ठितो देवैरादित्यैर्ऋषिभिस्तथा। गन्धर्वैरप्सरोभिश्च ग्रामणीसर्पराक्षसैः ॥२॥
धाता क्रतुस्थला चैव पुलस्त्यो वासुकिस्तथा। रथभृद्ग्रामणीर्हेतिस्तुम्बुरुश्चैव सप्तमः ॥३॥
एते वसन्ति वै चैत्रे मधुमासे सदैव हि। मैत्रेय स्यन्दने भानो सप्त मासाधिकारिणः ॥४॥
अर्यमा पुलहश्चैव रथौजाः पुञ्जिकस्थला। प्रहेतिः कच्छवीरश्च नारदश्च रथे रवेः॥५॥
माधवे निवसन्त्येते शुचिसंज्ञे निबोध मे ॥६॥
मित्रोऽत्रिस्तक्षको रक्षः पौरुषेयोऽथ मेनका। हाहा रथस्वनश्चैव मैत्रेयैते वसन्ति वै॥७॥
वरुणो वसिष्ठो नागश्च सहजन्या हूहू रथः । रथचित्रस्तथा शुक्रे वसन्त्याषाढसंज्ञके ॥८॥
इन्द्रो विश्वावसुः स्रोत एलापुत्रस्तथाङ्गिराः । प्रम्लोचा च नभस्येते सर्पिश्चार्के वसन्ति वै ॥९॥
विवस्वानुग्रसेनश्च भृगुरापूरणास्तथा। अनुम्लोचा शङ्खपालो व्याघ्रो भाद्रपदे तथा॥१०॥
पूषा वसुरुचिर्वातो गौतमोऽथ धनञ्जयः । सुषेणोऽन्यो घृताची च वसन्त्याश्वयुजे रवौ॥११॥
विश्वावसुर्भरद्वाजः पर्जन्यैरावतौ तथा । विश्वाची सेनजिच्चापः कार्तिके च वसन्ति वै ॥१२॥

द्वादश सूर्यों तथा उनके अधिकारियों का वर्णन

श्रीपराशर महर्षि ने कहा— आरोह एवं अवरोह के क्रम से एक वर्ष में सूर्य की जो गति होती है, उसकी काष्ठाओं का अन्तर एक सौ अस्सी मण्डल है ॥१॥ वह रथ आदित्य देवों, ऋषियों, गन्धर्वों, अप्सराओं, ग्रामणियों, सर्पों तथा राक्षसों के द्वारा अधिष्ठित है ॥२॥ हे मैत्रेय ! मधुमास चैत्र में धाता नामक आदित्य, क्रतुस्थला नामक अप्सरा, पुलस्त्य नामक ऋषि, वासुकि नामक सर्प, रथभृत् नामक ग्रामणी (यक्ष) हेति नामक राक्षस तथा तुम्बुरु नामक गन्धर्व ये सात सूर्य के रथ में अधिकारी रहते हैं ॥३-४॥ माधव नामक वैशाख मास में सूर्य के रथ में अर्यमा नामक आदित्य, पुलह नामक ऋषि, रथौजा नामक यक्ष, पुञ्जिक स्थल नामक अप्सरा, प्रहेति नामक राक्षस और कच्छवीर नामक सर्प ये सात अधिकारी रहते हैं । शुचि नामक ज्येष्ठ मास में ॥५-६॥ मित्र नामक आदित्य, अत्रि नामक ऋषि, तक्षक नामक सर्प, पौरुषेण नामक राक्षस, मेनका नाम की अप्सरा, हाहा नामक गन्धर्व तथा रथस्वन नामक यक्ष ये सात अधिकारी होते हैं ॥७॥ आषाढ़मास में वरुण नामक आदित्य, वसिष्ठ नामक ऋषि, नाग नामक सर्प, सहजन्या नाम की अप्सरा, हूहू नामक गन्धर्व, रथ नामक राक्षस और रथचित्र नामक यक्ष अधिकारी रहते हैं।॥८॥ श्रावण मास में सूर्य के रथ में इन्द्र नामक आदित्य, विश्वावसु नामक गन्धर्व, स्रोत नामक यक्ष, एलापुत्र नामक सर्प, अङ्गिरा नामक ऋषि, प्रम्लोचा नामक अप्सरा, और सर्पि नामक राक्षस अधिकारी होते हैं ॥९॥ भाद्रपद मास में सूर्य के रथ में विवस्वान् नामक आदित्य, उग्रसेन नामक गन्धर्व, भृगु नामक ऋषि, आपूरण नामक यक्ष, अनुम्लोचा नाम की अप्सरा, शङ्खपाल नामक सर्प और व्याघ्र नामक राक्षस अधिकारी होते हैं ॥१०॥ आश्विन मास में पूषा नामक आदित्य, वसुरुचि नामक गन्धर्व, वात नामक राक्षस, गौतम नामक ऋषि, धनञ्जय नामक सर्प, सुषेण नामक गन्धर्व और घृताची नाम की अप्सरा, ये सात अधिकारी सूर्य के रथ में रहते हैं ॥११॥ कार्तिक मास में विश्वावसु नामक गन्धर्व, भरद्वाज नामक ऋषि, पर्जन्य नामक आदित्य, ऐरावत नामक सर्प, विश्वाची नाम की अप्सरा, सेनजित् नामक यक्ष तथा आप नामक राक्षस सूर्य के रथ में निवास करते हैं ॥१२॥ मार्गशीर्ष मास में सूर्य

अंशकाश्यपताक्ष्यास्तु महापद्मस्तथोर्वशी । चित्रसेनस्तथा विद्युन्मार्गशीर्षेऽधिकारिणः ॥१३॥
क्रतुर्भगस्तथोर्णायुः स्फूर्जः कर्कोटकस्तथा । अरिष्टनेमिश्चैवान्या पूर्वचित्तिर्वराप्सराः ॥१४॥
पौषमासे वसन्त्येते सप्त भास्करमण्डले । लोकप्रकाशनार्थाय विप्रवर्याधिकारिणः ॥१५॥
त्वष्टाथ जमदग्निश्च कम्बलोऽथ तिलोत्तमा । ब्रह्मपेतोऽथ ऋतजिद् धृतराष्ट्रोऽथ सप्तमः ॥१६॥
माघमासे वसन्त्येते सप्त मैत्रेय भास्करे । श्रूयतां चापरे सूर्ये फाल्गुने निवसन्ति ये ॥१७॥
विष्णुरश्वतरो रम्भा सूर्यवर्चाश्च सत्यजित् । विश्वामित्रस्तथा रक्षो यज्ञोपेतो महामुने ॥१८॥
मासेष्वेतेषु मैत्रेय वसन्त्येते तु सप्तकाः । सवितुर्मण्डले ब्रह्मन्विष्णुशक्त्युपबृंहिताः ॥१९॥
स्तुवन्ति मुनयः सूर्यं गन्धर्वैर्गीयते पुरः । नृत्यन्त्यप्सरसो यान्ति सूर्यस्यानु निशाचराः ॥२०॥
वहन्ति पन्नगाः यक्षैः क्रियतेऽभीषुसङ्ग्रहः ॥२१॥
बालखिल्यास्तथैवेनं परिवार्य समासते ॥२२॥
सोऽयं सप्तगणः सूर्यमण्डले मुनिसत्तम । हिमोष्णवारिवृष्टीनां हेतुः स्वसमयं गतः ॥२३॥

इति श्रीविष्णुमहापुराणे द्वितीयेंऽशे दशमोऽध्यायः ॥१०॥

के रथ के अधिकारी अंश नामक आदित्य, काश्यप नामक ऋषि, ताक्ष्र्य नामक यक्ष, महापद्म नामक सर्प, उर्वशी नाम की अप्सरा, चित्रसेन नामक गन्धर्व और विद्युत् नामक राक्षस अधिकारी होते हैं ॥१३॥ हे विप्रवर ! पौष मास में भास्कर मण्डल में संसार का प्रकाशन करने के लिए, क्रतु नामक ऋषि, भग नामक आदित्य, ऊर्णायु नामक गन्धर्व, स्फुर्ज नामक राक्षस, कर्कोटक नामक सर्प, अरिष्टनेमि नामक यक्ष तथा पूर्वचिति नाम की अप्सरा ये अधिकारी होते हैं ॥१४-१५॥ हे मैत्रेय ! त्वष्टा नामक आदित्य, जमदग्नि नामक ऋषि, कम्बल नामक सर्प, तिलोत्तमा नामकी अप्सरा, ब्रह्मोपेत नामक राक्षस, ऋतजित् नामक यक्ष और धृतराष्ट्र नामक गन्धर्व माघ मास में ये सात सूर्य के रथ में अधिकारी रहते हैं । अब जो फलगुन मास में सूर्य के रथ में सात अधिकारी रहते हैं उनका नाम सुनो ॥१६-१७॥ हे महामुने ! वे अधिकारी विष्णु नामक आदित्य, अश्वतर नामक सर्प, रम्भा नाम की अप्सरा, सूर्यवर्चा नामक गन्धर्व, सत्यजित् नामक यक्ष, विश्वामित्र नामक ऋषि और यज्ञोपेत नामक राक्षस हैं ॥१८॥ हे ब्रह्मन्! भगवान् विष्णु की शक्ति से तेजोमय बने हुए ये सातों के गण, एक-एक मास तक सूर्यमण्डल में रहते हैं॥१९॥ मुनिगण सूर्य की स्तुति करते हैं, गन्धर्व सूर्य के समक्ष गान करते हैं, अप्सराएँ नृत्य करती हैं, राक्षस सूर्य के रथ के पीछे चलते हैं, सर्प रथ का वहन करते हैं, यक्षगण बागडोर संभालते हैं ॥२०-२१॥ बालखिल्य इसे सब ओर से घेरे रहते हैं ॥२२॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! ये सातो ही अपने-अपने समयानुसार उपस्थित होकर शीत, उष्ण और वृष्टि के कारण बनते हैं ॥२३॥

इस तरह श्रीविष्णुमहापुराण के द्वितीय अंश के दशवें अध्याय का शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) कृत हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण हुआ ॥१०॥